'हाय ! दीन इंसान की, करती बंटाधार'

रावण के वध में भला, क्या था मेरा काम।
'मैं' ने मारा था उसे, बोले माँ से राम।।-1

कई जन्म के पुण्य जब, फलते हैं सरकार।
तब इस मानव योनि का, दे ईश्वर उपहार।।-2

दौलत में जो है नशा, कब दे सकी शराब।
माया का होता नशा, सबसे अधिक खराब।।-3

सेवा मानव जाति की, मानें पुण्य महान।
इससे बड़ा न हो सके, यज्ञ और तप दान।।-4

गोरा तन इंसान का, रखता नहीं महत्व।
कितना उज्वल मन रहे, यह असली है तत्व।।-5

अगर सत्य का धर्म का, हो कोई संघर्ष।
भले अकेला तू रहे, रण में उतर सहर्ष।।-6

ज्ञान,शील,गुण,धर्म, तप, और न विद्या, दान ।
देह भले हो मनुज की, उसको पशु ही जान।।-7

दीन व्यक्ति पर कीजिए, कभी न अत्याचार।
हाय ! दीन इंसान की, करती बंटाधार।।-8

करके तिरछी जब नज़र , करे कामिनी बात।
दिल की धड़कन क्या बढ़ें, काँपे सारा गात।।-9

खोजा तब जाकर कहीं, हमने पाया राज।
करती थोथी वस्तुएं, सदा अधिक आवाज।।-10

जनता को भरमा रहे, बोल झूठ सौ टंच।
सत्ता पाने को सदा, नेता करे प्रपंच।।-11

द्वंद्व युद्ध में भीम ने, युद्ध नियम को छोड़।
दुर्योधन की जाँघ को, दिया गदा से तोड़।।-12

ISSN: 2583-8849
साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त2023 वर्ष1 अंक4

दिनेश प्रताप सिंह चौहान
पिता : स्व. आनंदपाल सिंह चौहान
माता: स्व. रामा बाई चौहान
जन्मतिथि : 14/11/ 1954
शिक्षा: बीए, एल एल बी
अन्य: मध्य प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के माध्यम से क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड में स्टेट पैनल क्रिकेट अंपायर,
कार्य: 1978 **तक एटा जिला न्यायालय में वकालत,**
दिसंबर 1978 **से मई** 1981 **तक पश्चिम रेलवे में सहायक स्टेशन मास्टर,**
मई 1981 **से नवंबर** 2014 **तक बैंक ऑफ बड़ौदा में कार्य और वहां से प्रबंधक के रूप में सेवा निवृत.**
साहित्यिक कार्य: "**तहलका**" **में काव्य मय टिप्पणी लेखन,**
डायमंड पॉकेट बुक्स में व्यंग्य लेख का प्रकाशन।
बैंक ऑफ बड़ौदा की एक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका में काव्य रचना का प्रकाशन।
मो. 9719766035